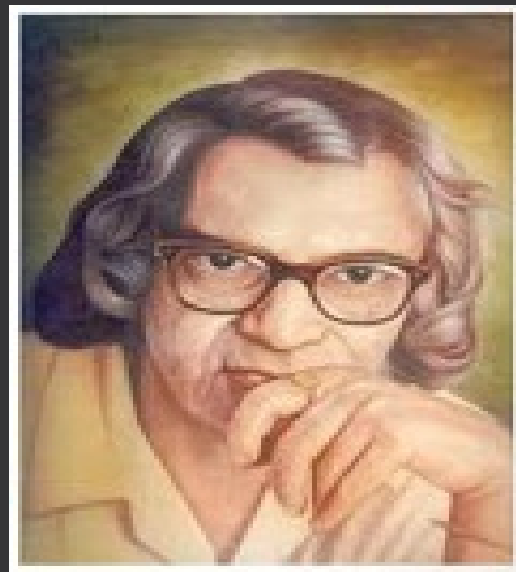


मैं सबसे छोटी होऊँ

सुमित्रानंदन पंत



मुख्य बिंदु

बड़ी होती बच्ची
हमेशा छोटी बनकर
अपनी माँ के साथ
रहना चाहती है।

बच्चों को ऐसा लगता
है कि माँ बच्चों को
बड़ा बनाकर उनका
साथ छोड़ देती है।

माँ बच्चों के काम नहीं
करती इसलिए वह बच्चों
से प्रेम नहीं करती है।

बड़े बच्चों को माँ तैयार
नहीं करती, हाथ नहीं
धोती और न ही परियों
की कहानी सुनाती।

बच्चे माँ की गोद में
आकर निड़र, इच्छा
रहित हो जाते हैं।

यही कारण है बच्चे बड़े
होकर माँ के प्रेम को
खोना नहीं चाहते हैं।

पाठ का सार

‘मैं सबसे छोटी होऊँ’ कविता सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित है। यह एक बाल गीत है। कविता में बच्ची हमेशा छोटी बनी रहना चाहती है। माँ का प्रेम उसके लिए अनमोल है। माँ साथ पाने के लिए वह कभी बड़ी नहीं होना चाहती। वह माँ की गोद में सोना चाहती है, आँचल पकड़कर चलना चाहती है। बच्ची को लगता है जब तक वह छोटी है माँ उनके सारे काम करती है, साथ रहती है। बड़े होने पर माँ उनसे दूर होती जाती है। माँ के पास रहने पर वह इतनी निडर हो जाती है कि अंधेरे में भी चाँद देखने की ज़िद्द करती है।